भगत रविदास – सबद २
मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
रागु गउड़ी गुआरेरी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ३४५

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥
चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३॥१॥

सार: हमारे विचार हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू को गहराई से प्रभावित करते हैं। वह हमारे कर्मों को दिशा देते हैं, हमारी भावनाओं को आकार देते हैं और अंततः हमारी वास्तविकता को निर्धारित करते हैं। इसलिए विचारों की अपार शक्ति को पहचानना बहुत ज़रूरी है। यह आत्म-मंथन हमें सार्थक बदलाव करने की शक्ति देता है जिससे व्यक्तिगत परिवर्तन का रास्ता खुलता है। आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया में शामिल होकर, अपने अंदर के विचारों और व्यवहारों पर विचार करके, हम विकास और उन्नति के अवसर खोज सकते हैं।

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥
मैं नकारात्मक और हीन विचारों की संगति में रहता हूँ और वह मुझे दिन-रात कष्ट देते हैं।

मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१॥

मेरे कर्म असम्मानित हो गए हैं और मेरा अस्तित्व अयोग्य लगता है। यह आत्म-चिंतन के द्वारा बदलाव की तलाश का सुझाव देता है क्योंकि अपनी कमी को स्वीकार करना व्यक्तिगत विकास की ओर पहला कदम है। (१)

राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥

सर्वव्यापी चेतना ही समस्त सृष्टि में जीवन के रूप में प्रकट होती है।

मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥

मुझे भूलो नहीं, मैं तुम्हारी अपनी रचनात्मकता का प्रतीक हूँ। यह स्मरण के रूप में काम करता है कि प्रत्येक रचना सार्वभौमिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है और जागरूकता की हकदार है। (१)(विराम)

मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥

साथी जीवों की तरफ़ सौम्यता और करुणा का भाव पैदा करके मेरी पीड़ा को दूर करो। यह प्रार्थना ऐसे ज्ञान की तलाश को दिखाती है जो सद्गुणों को बढ़ावा दे सके जिससे स्वयं और दूसरों के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥

भले ही मेरा शरीर नष्ट हो जाए, मैं सर्वव्यापी चेतना से कभी अलग नहीं हो सकता। यह चुनौतियों की परवाह किए बिना, एकत्व के प्रति अडिग निष्ठा-भक्ति को दर्शाता है। (२)

कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥

रविदास कहते हैं, मैं सर्वव्यापी चेतना की शरण चाहता हूँ।

बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३॥१॥

शीघ्र एकत्व को अपनाओ साथी जीवों, इस प्रयास में देरी न करो। यह जल्दबाज़ी इस बात का प्रतीक है कि हमारा एकत्व को अपनाना ज़रूरी है, इससे पहले कि अलगाव हमारे सामूहिक कल्याण में संकट पैदा कर दे। (३)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास आत्मचिंतन के माध्यम से इस बोध तक पहुँचते हैं कि सृष्टि का हर अंश परस्पर जुड़ा हुआ है और सबसे छोटा तत्व भी अस्तित्व की बड़ी तस्वीर में अहम भूमिका निभाता है। सर्वव्यापी भावना को अपनाकर, हम अपनी एकता का जश्न मनाते हैं और दूसरों को उन संबंधों का सम्मान करने के लिए प्रेरित करते हैं जो हमें एक साथ बाँधते हैं। यह समझ हमें दुनिया में अपनी भूमिकाओं को पहचानने और इस साँझा यात्रा में एक-दूसरे को ऊपर उठाने के लिए प्रोत्साहित करती है और हमें ऐसे गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है जो अटूट एकत्व को बढ़ावा देते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com